Knowledgeable Research (KR) 2026, Special Vol., (5):01
ISSN: 2583-6633, CODEN: KRABAU
International open-access peer-reviewed refereed monthly journal
https://knowledgeableresearch.com/index.php/1

कृत्रिम बुद्धिमत्ता के युग में हिन्दी की भूमिका

प्रा. डॉ. सुधीर गणेशराव वाघ*
हिन्दी विभागाध्यक्ष
शिवाजी महाविद्यालय, हिंगोली. महाराष्ट्र

शोध सार

आधुनिक प्रौद्योगिकी युग में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) का प्रयोग साहित्य, समाज तथा संस्कृति की सबसे रोमांचक प्रगति में से एक है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता के रूप में जाने जाने वाले कंप्यूटर के लिए समाज मे रहने वाले लोगों की तरह व्यवहार करना संभव है। इस तरह, मशीनें मनुष्य की तरह तर्क करना, निर्णय लेना और साथ ही समस्याओं को समझना और हल करने मे महारत हासिल कर रहीं हैंनई प्रौद्योगिकियों में चल रहे विकास के आलोक में, साहित्य, समाज तथा संस्कृति के अध्ययन का भविष्य और भी दिलचस्प हो गया है। आज, डेटा पूलिंग और कृत्रिम बुद्धिमत्ता, साहित्य की दुनिया मे ई-पुस्तकें, वीडियो, पॉडकास्ट, सिमुलेशन और गेम जैसे इंटरनेट संसाधनों तक पहुंच प्रदान कर रही है। प्रौद्योगिकी समाज में लोगों के साहित्यिक अनुभव को बेहतर बना रही है। सीखने-सिखाने को अधिक इंटरैक्टिव, अनुकूलित और मजेदार बनाना कृत्रिम बुद्धिमत्ता का ही चमत्कार कहा जा सकता है। साहित्यिक आयोजनों के लिए यह वैकल्पिक मंच कोविड काल के दौरान सामने आया, जिसने हमें उस कठिन समय में भी इन आयोजनों के बारे में सूचित रखा और अब भी प्रासंगिक है। आज कहा जा सकता है कि साहित्य और साहित्यकारों के लिए अधिक जगह है और लेखक और पाठक के बीच का अंतर कम हो गया है। आने वाले समय मे कृत्रिम बुद्धिमत्ता के विकास से साहित्य जगत् में न केवल अंग्रेजी में, बल्कि भारतीय भाषा साहित्य में भी महत्त्वपूर्ण परिवर्तन संभव होंगे।

बीज शब्द: *कृत्रिम बुद्धिमत्ता, डिजिटल, तकनीक, यांत्रिक उपकरण, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, सॉफ्टवेयर, रोबोट, कंप्यूटर साहित्यिक अनुवाद।*

Received: 11/12/2025
Accepted: 24/01/2026
Published: 31/01/2026

***Corresponding Author:**
प्रा. डॉ. सुधीर गणेशराव वाघ
Email: sudhirwagh1999@gmail.com

मूल आलेख: हम सभी जानते हैं कि हिन्दी की उत्पत्ति प्राचीनतम भाषा संस्कृत से हुई है जिसका इतिहास लगभग साढ़े तीन हज़ार साल का है। इस समृद्ध संस्कृत भाषा के महत्व को ऐसे समझा जा सकता है।भारत में संस्कृत 1500 ई. पू., से 1000 ई. पूर्व तक रही, ये भाषा दो भागों में विभाजित हुई-

1. वैदिक भाषा अथवा वैदिक संस्कृत (1500 ई.पू. 1000 ई.पू.) एवं 2. लौकिक भाषा लौकिक संस्कृत (1000 ई.पू. 500 ई.पू.)

मूल रूप से वेदों की रचना जिस भाषा में हुई, उसे 'वैदिक संस्कृत' कहा गया जिसमें वेद और उपनिषद् का जिक्र आता है। इससे यह अनुमान होता है कि संभवतः आर्यों की सबसे प्राचीन प्राचीन भाषा ऋग्वेद की भाषा वैदिक संस्कृत ही थी और जिसमें दर्शन ग्रंथों का जिक्र आता है, उसे 'लौकिक संस्कृत' कहा गया। इस भाषा में रामायण, महाभारत, नाटक, व्याकरण आदि ग्रंथ लिखे गए हैं। यहाँ तक कि वाल्मीकि, व्यास, अश्वघोष, कालिदास, माघ इत्यादि की रचनाएँ इसी में है। संस्कृत के बाद जो भाषा आती है, वह है पालि। पालि भाषा 500 ई. पू. से पहली शताब्दी तक रही और इस भाषा में बौद्ध ग्रंथों की रचना हुई। पालि के बाद प्राकृत भाषा का आगमन हुआ। यह पहली ईस्वी से लेकर 500 ई. तक रहीं। इस भाषा में जैन साहित्य काफी मात्रा में लिखे गए थे। पहली ईसवी तक आते-आते यह बोलचाल की भाषा और परिवर्तित हुई तथा इसको प्राकृत की संज्ञा दी गई। वास्तव में इस प्राकृत भाषा में क्षेत्रीय बोलियों की संख्या बहुत सारी थी, जिनमें शौरसेनी, पेशाची, ब्राचड़, मराठी,

मागधी और अर्धमागधी आदि प्रमुख हैं। प्राकृत भाषा के अंतिम चरण से अपभ्रंश का विकास हुआ ऐसा माना जाता है। यह भाषा 500 ई. से 1000 ई. तक रही। ऐसा कहा जाता है कि हिंदी का जो विकास हुआ है, वह अपभ्रंश से हुआ है और इस भाषा से कई आधुनिक भारतीय भाषाओं और उपभाषाओं का जन्म हुआ है, जिसमें पश्चिमी हिन्दी, राजस्थानी और गुजराती, पंजाबी, सिन्धी, पहाड़ी, महाराष्ट्री (मराठी), मागधी (विहारी, बांग्ला, उड़िया और असमिया), और अर्थ मागधी (पूर्वी हिन्दी) शामिल है। तत्पश्चात भारत के स्वतन्त्रता संग्राम में हिंदी और हिंदी पत्रकारिता की बहुत अहम् भूमिका रही।

हिन्दी भाषा का उद्भव

हिन्दी भाषा का इतिहास लगभग एक हजार वर्ष पुराना माना गया है। सातवीं-आठवीं शताब्दी से ही 'पद्य' रचना प्रारम्भ हो गयी थी। आधुनिक भारतीय आर्यभाषा का समय 1000 ई. से अब तक का है। इस आधुनिक काल में अपभ्रंश के अनेक स्वरूपों से हिन्दी, राजस्थानी, गुजराती, पंजाबी, सिंधी, पहाड़ी, मराठी, बिहारी, बांग्ला, उड़िया, असमिया आदि का जन्म हुआ। आगे चलकर कई उपभाषा जैसे ब्रजभाषा, जयपुरी, भोजपुरी, अवधी, गढ़वाली, मगही, मैथिली इत्यादि को भी 'हिन्दी' कहा जाने लगा।

हिन्दी भाषा व साहित्य के जानकार चंद्रधर शर्मा 'गुलेरी' ने इसे 'पुरानी हिन्दी' नाम दिया। साहित्य की दृष्टि से पद्य के रूप में जो रचनाएँ मिलती हैं, वे दोहा रूप में ही हैं और उनके विषय, धर्म, नीति, उपदेश आदि प्रमुख हैं। पहले के कविगण नीति, शृंगार, शौर्य, पराक्रम आदि के वर्णन से अपनी साहित्य-रुचि का परिचय दिया करते थे। इस तरह पुरानी अपभ्रंश भाषा का प्रचलन बढ़ता गया जिसे महाकवि 'विद्यापति' ने 'देशी भाषा' की संज्ञा दी।

हिन्दी भाषा का परिचय हम तीन तरह से दे सकते हैं :

1. यह उत्तर भारत की प्रमुख बोलचाल की भाषा है।
2. इस भाषा का प्रयोग साहित्य एवं संस्कृति में किया जाता है।
3. यह भारत की राजभाषा है।

भारत के स्वतंत्रता संग्राम में हिन्दी और हिन्दी पत्रकारिता की बहुत अहम भूमिका रही है। भारत के स्वतंत्रता संग्राम में हिन्दी ने जन-जागरण, राष्ट्रीय एकता और अस्मिता के प्रतीक के रूप में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई; इसने कविता, गद्य, नाटक और पत्रकारिता के माध्यम से लोगों में देशभक्ति की भावना जगाई, ब्रिटिश सत्ता के विरुध्द एकजुट किया और एक आम आवाज़ बनकर राष्ट्रवाद को मज़बूत किया, जिससे यह आंदोलन को गति देने वाला एक शक्तिशाली हथियार बनी। स्वतंत्रता संग्राम के बाद हिन्दी को 14 सितम्बर 1947 को राजभाषा का दर्जा मिला है।

ज्ञान या जानकारी सम्बन्धी मामलों में किसी मशीन के मानवीय दिमाग की तरह काम करने की क्षमता को 'कृत्रिम मेधा' (एआई) कहा जाता है। मसलन महसूस करने या समझने, तर्कसंगत ढंग से सोचने, सीखने, समस्याओं को हल करने और यहाँ तक कि रचनात्मकता का इस्तेमाल इसके दायरे में आते हैं।

विश्व में कृत्रिम बुद्धिमत्ता प्रौद्योगिकी का सबसे पहले प्रयोग संयुक्त राज्य अमेरिका द्वारा किया गया था। संयुक्त राज्य अमेरिका ने इस प्रौद्योगिकी का प्रयोग सबसे पहले अंग्रेजी भाषा को रूसी भाषा में परिवर्तित करने तथा रूसी भाषा को अंग्रेजी भाषा में परिवर्तित करने के लिए किया था।

कृत्रिम मेधा तकनीकी के सहारे हिन्दी ज्ञान को और सरल बनाया जा सकता है। हिन्दी का उत्तरोत्तर विकास होता रहा और कृत्रिम मेधा प्रौद्योगिकी के आगमन से विभिन्न भाषाओं में आपस में बातचीत करना तथा बदलने में आसानी होने लगी। भारत सरकार इस दिशा में अनवरत कार्य कर रही है।

वर्तमान समय कृत्रिम बुद्धिमता का समय है। विकास को गति देनेऔर लोगों को बेहतर सुख-सुविधाएँ उपलब्ध कराने के लिए प्रत्येक क्षेत्र में अत्याधुनिक तकनीक का भरपूर उपयोग किया जा रहा है। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस या कृत्रिम बुद्धिमता या कृत्रिम मेधा भी ऐसी ही अत्याधुनिक तकनीक है जिसका प्रयोग आज शिक्षा, स्वास्थ्य, वाणिज्य मनोरंजन, परिवहन आदि अनेक क्षेत्रों में हो रहा है। कृत्रिम बुद्धिमता प्रौद्योगिकी विज्ञान की एक ऐसी शाखा है जिसके अन्तर्गत मशीनें ही इस प्रकार से व्यवहार करती है जिस प्रकार से मानव अपनी बुद्धिमता का उपयोग करता है। इसका अर्थ यह है कि मशीनें जब समय और परिस्थिति इत्यादि के विश्लेषण के बाद कोई निर्णय लेती है, तो मशीन की इस अवस्था को कृत्रिम बुद्धिमता कहा जाता है। आर्टिफिशियल

इंटेलिजेंस कंप्यूटर साइंस का सब-डिवीजन है और इसकी जड़े पूरी तरह से कम्प्यूटिंग सिस्टम पर आधारित है। इसका अंतिम लक्ष्य ऐसे उपकरणों का निर्माण करना है जो बुद्धिमानी से और स्वतंत्र रूप से कार्य कर सके और मानव श्रम को कम कर सके।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता अब केवल एक सैद्धांतिक अवधारणा नहीं रह गई है, बल्कि एक व्यावहारिक उपकरण बन गई है जो साहित्यिक प्रक्रियाओं के विभिन्न चरणों अनुवाद, विश्लेषण और सृजन को प्रभावित कर रही है। हिन्दी साहित्य के संदर्भ में, इसके अनुप्रयोगों की क्षमता और सीमाएँ दोनों ही स्पष्ट रूप से उभर रही हैं। हिन्दी भाषा, साहित्य की भाषा होने के साथ-साथ, आधुनिक ज्ञान, विज्ञान को अंगीकार करके अग्रसर होने में सक्षम भाषा है। कृत्रिम मेधा ज्ञान की एक नई विधा है और भारत इसमें बहुत प्रगति कर चुका है. और कर रहा है। इस प्रगति में हिन्दी साथ चल रही है। हिन्दी में कृत्रिम बुद्धिमत्ता के क्षेत्र में महत्वपूर्ण कार्य घटित हो रहा है। ध्वनि प्रसंस्करण की बदौलत वाक से पाठ और पाठ से वाक प्रौद्योगिकी उपलब्ध हो गई है। कंप्यूटर विजन के कारण हिंदी के दस्तावेजों को स्कैन करके उनके पाठ को कंप्यूटर में टाइप किए गए पाठ के रूप में सहेजना संभव हो गया है। डेढ़ सौ से अधिक वैश्विक भाषाओं और बीस से अधिक भारतीय भाषाओं के साथ हिन्दी के पाठ का दो तरफा अनुवाद संभव है। अलेक्सा, कोर्टाना, सिरी और गूगल असिस्टेंट जैसे डिजिटल सहायकों के साथ या तो हिंदी में संवाद करना संभव है या इंटरनेट सर्च तथा अनुवाद आदि के लिए उनकी मदद ली जा सकती है। माइक्रोसॉफ्ट और गूगल जैसी कंपनियों की एपीआई का प्रयोग करके हिंदी में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस से युक्त एप्लीकेशन बनाना संभव हो गया है। चैटजीपीटी तो ऐसी कृत्रिम बुद्धिमत्ता है जिसके साथ संवाद किया जा सकता है और अपने प्रश्नों के उत्तर प्राप्त किये जा सकते हैं। प्रौद्योगिकी से कदम मिलाते हुए असंख्य शिक्षक, कलाकार एवं रचनाकार यूट्यूब, फ्लिपबोर्ड, सबस्टैक, और स्टीमिट जैसे अनेक इंटरनैट प्लैटफार्मों के माध्यम से करोड़ों पाठकों, दर्शकों और श्रोताओं तक अपनी बात सीधे 'एक किल्क में' पहुँचा सकते हैं।

हिंदी भाषा कृत्रिम मेधा के साथ जुड़कर भविष्य की चुनौतियों का सामना करने में सक्षम हो सकती है। इस दिशा में कुछ प्रगति हुई है और बहुत कुछ अभी शेष है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता हिन्दी भाषा के लिए नए रास्ते खोल सकती हैऔर अस्तित्य को सुरक्षित रखने में योगदान दे सकती है। माइक्रोसॉफ्ट में भारतीय भाषाओं के प्रभारी श्री बालेंदु शर्मा दाधीच लिखते हैं- 'कृत्रिम बुद्धिमत्ता हिन्दी के स्थायी भविष्य को सुनिश्चित कर सकती है। यूनेस्को ने अपनी एक रिपोर्ट में कहा था कि दुनिया की 7200 भाषाओं में से लगभग आधी इस शताब्दी के अंत तक विलुप्त हो जाएगी। अगर हम हिन्दी को विलुप्त होने वाली इन भाषाओं की सूची में नहीं देखना चाहते तो हमें कृत्रिम मेधा को खुले दिल से अपनाना चाहिए। वजह यह है कि यह प्रौद्योगिकी भाषाओं के बीच दूरियाँ समाप्त करने में सक्षम है। आज हम अंग्रेजी की प्रधानता से त्रस्त हैं और कृत्रिम मेधा तथा दूसरी आधुनिक प्रौद्योगिकियाँ अंग्रेजी के दबदबे से मुक्त होने में हमारी मदद कर सकती है।"

कृत्रिम बुद्धिमत्ता-संचालित अनुवाद उपकरण भारतीय साहित्य, जिसमें हिन्दी साहित्य भी शामिल है, को वैश्विक मंच पर प्रस्तुत करने की अपार क्षमता रखते हैं। ये उपकरण भाषा की बाधाओं को तोड़कर कृतियों को व्यापक पाठक वर्ग तक पहुँचा सकते हैं, जिससे सांस्कृतिक आदान-प्रदान को बढ़ावा मिलता है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता की मदद से भाषा के क्षेत्र में सबसे बड़ा कार्य ये हो सकता है कि अन्य प्रमुख भाषाओं के साथ हिंदी के गहरे संबंधों को विकसित किया जा सकता है। हमारा हिन्दी साहित्य, रामायण, महाभारत, श्रीमदभगवद्गीता, वेद, पुराण, उपनिषद जैसे ग्रंथ, आयुर्वेद योग जैसी ज्ञान संपदा आदि दुनिया भर में गैर हिंदी पाठकों तक पहुँच सकती हैं। इससे कहीं अधिक आवश्यक और महत्वपूर्ण है विश्व के ज्ञान, शोध, साहित्य का हिंदी भाषी लोगों तक पहुँचना। हिंदी में विज्ञान, तकनीक, चिकित्सा, अर्थव्यवस्था आदि विषयों पर विश्व स्तरीय सामग्री की कमी है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता की मदद से ऐसी सामग्री हिंदी में तैयार की जा सकती है और मशीन अनुवाद के माध्यम से वैश्विक ज्ञान को हिन्दी भाषा में ग्रहण किया जा सकता है। यह ज्ञान अंग्रेजी से भी आगे बढ़कर अन्य क्षेत्री पूर्वी पश्चिमी उत्तरी तथा दक्षिणी से भी प्राप्त किया जा सकेगा।

तकनीकी दृष्टिकोण से, अनुवाद प्रक्रिया पहले से कहीं अधिक सरल, तीव्र और सटीक हो गई है, और अधिकांश मामलों में मूल पाठ के मुख्य अर्थ और संदेश को संरक्षित रखा जाता है। मशीन अनुवाद कृत्रिम बुद्धिमता का एक हिस्सा है। मशीन

अनुवाद की मदद से भाषाओं के बीच दूरियों कम हो रही है। यह मशीन अनुवाद निरंतर बेहतर हो रहा है क्योंकि कृत्रिम बुद्धिमत्ता मानव-व्यवहार, कामकाजे डेटा भंडारों, फीडबैक आदि से सीखने तथा स्वयं को निरंतर निखारने में सक्षम है। बालेन्दु शर्मा दाधीच लिखते है-कुछ वर्षों के भीतर हम ऐसे मशीन अनुवाद की स्थिति में पहुँच सकते हैं जो मानवीय अनुवाद की ही टक्कर का होगा। सबसे बड़ी बात यह है कि यह अत्यंत स्वाभाविक रूप से उपलब्ध होगा कंप्यूटर तथा मोबाइल के जरिए ही नहीं बल्कि दर्जनों किस्म के डिजिटल उपकरणों के जरिए जो हमारे घरों दफ्तरों विद्यालय और यहां तक की रास्तों और इमारत में भी मौजूद होंगे। अनुवाद के माध्यम से वैश्विक पहुँच बढ़ाने, कम्प्यूटेशनल विश्लेषण के माध्यम से आलोचनात्मक अंतर्दृष्टि को गहरा करने और रचनात्मक सहायक के रूप में लेखकों को नए उपकरण प्रदान करने की अपार क्षमता रखती है। तथापि, इसकी क्षमताएँ गंभीर चुनौतियों और सीमाओं के साथ आती हैं।

कृत्रिम मेधा की मदद से विद्यालयों महाविद्यालयों में शिक्षण कार्य को अप्रत्याशित ढंग से बेहतर, विस्तृत और वैश्विक बनाया जा सकता है। हिंदी में शिक्षण सामग्री तैयार करना आसान और तेज हो जायेगा। अन्य भाषाओं की पुस्तकों को स्कैन करके अत्यंत कम समय में सीधे हिंदी में अनुवाद करना संभव हो गया है। इससे लाभयह होगा कि हम हिंदी में जिन विषयों में अच्छी अध्ययन सामग्री की कमी से जूझते रहे हैं, उन विषयों में पर्याप्त पुस्तकें उपलब्ध हो जाएंगी। हिंदी में पारंपरिक ज्ञान का दस्तावेजीकरण आसान हो जाएगा। वाचिक ज्ञान को डिजिटल स्वरूपों में सहेजा जा सकेगा। हिंदी भाषी लोग वैश्विक संस्थानों में पढ़ सकेंगे, भाषाओं की सीमाओं से मुक्त रहते हुए कौशल प्राप्त कर सकेंगे और विश्व को अपनी सेवाएँ दे सकेंगे। हिन्दी बोलने वाला व्यक्ति प्रौद्योगिकी के प्रयोग से अंग्रेजी, जापानी, चीनी, स्पैनिश, फ्रेन्च या अन्य भाषा-भाषी लोगों को कन्टेन्ट और सेवाएँ उपलब्ध करा सकेगा, बिना उन भाषाओं की जानकारी रखे।

प्रौद्योगिकी में रोजगार के अवसरों को कम करने और आर्थिक असमानता को बढ़ाने की भी क्षमता है। हालाँकि, भारत को अभी भी इस तकनीक को कई अन्य क्षेत्रों में लागू करने के लिए और अधिक प्रयास करने होंगे। इसके अतिरिक्त, यह याद रखना चाहिए कि पर्याप्त कृत्रिम बुद्धिमत्ता सुरक्षा उपायों के अभाव में समाज में सामाजिक और आर्थिक असमानता तेजी से बढ़ सकती है। ए.आई. अर्थव्यवस्था के विकास के लिए डेटा महत्त्वपूर्ण है। परिणामस्वरूप, दूसरों की गोपनीयता का सम्मान करते हुए जिम्मेदारी से डेटा का उपयोग करना महत्त्वपूर्ण है। डेटा और उसके नैतिक उपयोग को विनियमित करने के लिए एक ठोस कानूनी ढांचा भी आवश्यक है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता-आधारित क्षेत्रों में उपयोग के लिए डेटा का विश्लेषण और वर्गीकरण करने के लिए भारत में कोई "डेटा प्रबंधन केंद्र" नहीं है। परिणामस्वरूप, सरकार को डेटा प्रबंधन बुनियादी ढांचे में निवेश करने के लिए व्यावसायिक क्षेत्र के साथ काम करना चाहिए। भारत ने हाल के कुछ वर्षों में कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) प्रौद्योगिकियों को शामिल करने के लिए कई महत्त्वपूर्ण प्रयास किए हैं। भारत ने अपने कौशल विकास की बदौलत कृत्रिम बुद्धिमत्ता कार्यबल में असाधारण वृद्धि का अनुभव किया है, लेकिन देश की बढ़ती मांग को पूरा करने के लिए उपलब्ध श्रमिकों की संख्या अभी भी अपर्याप्त है। इसके अतिरिक्त, मशीन लर्निंग से जुड़े मानव संसाधनों की उचित उपलब्धता सुनिश्चित करने के लिए क्षेत्रीय स्तर पर शीर्ष तकनीकी केंद्र और कौशल-विकास कार्यक्रम स्थापित करने के प्रयास किए जाने चाहिए। यह महत्त्वपूर्ण है कि हम, एक समाज के रूप में, इन खतरों के प्रति जागरूक रहें और प्रौद्योगिकी द्वारा प्रदान किए जाने वाले लाभों का आनंद लेते हुए उन्हें कम करने के लिए कदम उठाएँ।

सारांश: मनुष्य ने उत्तरोत्तर विकास किया है और अपने जीवन में सुख-सुविधाएँ बढ़ाने के लिए नित नए आविष्कार किए हैं। मनुष्य द्वारा पहिये के आविष्कार से आज कृत्रिम बुद्धिमत्ता के आविष्कार तक की यात्रा अनोखी रही है। हर आविष्कार आशंकाएँ लेकर आता रहा और हमारे जीवन का अहम अंग बनता गया। आज जीवन के विविध क्षेत्रों में सूचना प्रौद्योगिकी के विस्तार और वर्चस्व ने स्तंभित कर दिया है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) संचालित और प्रशिक्षित सहायकों से हर क्षेत्र में एक नई कार्यपद्धति का विकास हुआ है। जिसके लिए संभवतः हम अभी पूरी तरह तैयार नहीं है । इसलिए हमारे मन में अनेक प्रश्न उमड़-घुमड़ रहे हैं।

वर्तमान समय में कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) समाज के हर क्षेत्र में

परिवर्तन का माध्यम बन रही है। हिंदी साहित्य भी इससे अछूता नहीं है। साहित्यिक सृजन, अनुवाद, आलोचना, शोध, संरक्षण और अभिलेखन जैसे विविध क्षेत्रों में AI का प्रभाव स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है।

AI आधारित टूल्स न केवल कविताओं, कहानियों और निबंधों की रचना में सहायक सिद्ध हो रहें हैं, बल्कि हिंदी साहित्य को वैश्विक मंच तक पहुँचाने में भी योगदान दे रहे हैं। साथ ही, डिजिटल संरक्षण और टेक्स्टमाइनिंग जैसी तकनीकों ने साहित्यिक धरोहर को सुरक्षित और शोध के लिए सुलभ बना दिया है। हालाँकि, इसके उपयोग से प्रामाणिकता, नैतिकता, कॉपीराइट और
पारंपरिक पठनसंस्कृति जैसी चुनौतियाँ भी सामने आई हैं। प्रस्तुत शोधपत्र में हिंदी साहित्य में AI की भूमिका, संभावनाएँ, चुनौतियाँ और उद्धरणों के माध्यम से इसका विवेचन किया गया है।

संदर्भ:-

1. बालेंदु शर्मा दाधीच 'हिंदी विमर्श की मुख्यधारा में कृत्रिम बुद्धिमत्ता' साहित्य परिक्रमा जुलाई-2023.
2. शर्मा रमेश, 'कृत्रिम बुद्धिमत्ता और साहित्यिक रचनात्मकता' नई दिल्ली:
राजकमल प्रकाशन-2023.
3. शर्मा रामविलास, 'आधुनिक हिंदी साहित्य और तकनीक' नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन, 2021.
4. गुप्ता अंजली, 'डिजिटल युग में हिंदी साहित्य' मुंबई: वाणी प्रकाशन-2022.

Copyright: © The authors. This article is open access and licensed under the terms of the Creative Commons Attribution License (http://creativecommons.org/licenses/by/4.0/)